ISSN (O): 2320-5407
ISSN (P): 3107-4928

Journal Homepage: - www.journalijar.com

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH (IJAR)

Article DOI: 10.21474/IJAR01/23066
DOI URL: http://dx.doi.org/10.21474/IJAR01/23066

CONFERENCE PAPER

सामाजिक-आर्थिक विकास में संगीत शिक्षा का योगदान

प्रतीक्षा मिश्रा and डॉ. सुरेन्द्र कुमार

1. सह आचार्य संगीत एवं प्रदर्शन कला विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय.

Manuscript Info

Manuscript History
Received: 04 January 2026
Final Accepted: 08 February 2026
Published: March 2026

Key words:-
समाज, संगीत, शिक्षण, रोजगार

Abstract

हमारा संगीत मानव जीवन के प्रत्येक चरण को प्राचीनकाल से ही प्रभावशाली ढंग से फलप्रद करता हुआ देखा जाता है| संगीत अन्यत्र कलाओं में सर्वश्रेष्ट कला मानी गई है। यह केवल मनोरंजन का साधन ही नहीं है, बल्कि समाज के सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए सहस्त्र कार्यरत भी देखने को मिलता है। प्राचीन काल से ही भारतवर्ष में संगीत को शिक्षा का मुख्य बिंदु और जीवन का अभिन्न अंग माना जाता है। आज के आधुनिक समय में भी संगीत शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, सामाजिक एकता और आर्थिक उन्नति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हुई परिलक्षित हो रही है। हमारी संगीत शिक्षा केवल गायन-वादन सीखने तक ही सीमित नहीं है अपितु यह अनुशासन, रचनात्मकता, संवेदनशीलता और सामाजिक समरसता को भी विकसित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हुई देखी जाती है। इसके माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति अपने भीतर की भावनाओं को व्यक्त करनें तथा समाज की पारम्परिकता, प्रथाओं, रीति-रिवाजों आदि से जुड़ाव महसूस करता है| आर्थिक दृष्टि से भी संगीत शिक्षा को रोजगारोन्मुख बनाया जा रहा हैं, जिसके चलते संगीत के साधकों, संगीत कलाकारों को आर्थिक समस्याओं से मुक्ति तो मिलती ही है साथ ही साथ उनकी कला को प्राप्त होने वाला सम्मान उन्हें अपने सांगीतिक जीवन को और संगीत समाज को उत्कृष्टता पर ले जाने के लिए प्रेरित भी करता है, इसलिए सामाजिक-आर्थिक विकास में संगीत शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण दृष्टिगोचर होती है।

"© 2026 by the Author(s). Published by IJAR under CC BY 4.0. Unrestricted use allowed with credit to the author."

Corresponding Author:- प्रतीक्षा मिश्रा
Address:-सह आचार्य संगीत एवं प्रदर्शन कला विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय.

Introduction:-

हमारा संगीत भारतीय संस्कृति का एक अभिन्न अंग है| प्राचीन काल से ही संगीत समाज के उत्थान में तथा जीविकोपार्जन की दृष्टि से चलायमान रहा है| किसी भी समाज में विद्दमान परम्पराएं, संस्कृति, प्रथाएं आदि उस समाज के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हुई देखी जाती हैं| जिनमें मुख्यतः भारतीय संस्कृति की तरफ दृष्टिगोचर हो तो हमारी "भारतीय संस्कृति देव संस्कृति कहलाती है। भारतीय संस्कृति तो एक निरन्तर विकासशील जीवन पद्धति रही है। संस्कृति किसी भी समाज एवं उसके इतिहास का प्रत्यक्ष दर्पण परिलक्षित होती है। मानव-समाज की पूर्व परम्पराएँ पूर्वजों के संस्कार, जिनमें प्राचीनता के साथ-साथ मान्यता प्राप्त नवीनताएँ भी शामिल देखी जाती हैं, संस्कृति कहलाती हैं। मानव के व्यक्तित्व का निर्माण एवं विकास एक समाज पर ही निर्भर होता है और उस समाज की संस्कृति ही उसकी उन्नति या अवनति का कारण भी होती है।1 हमारे भारतीय समाज में अनेंकनेक विचारधारा के लोग रहते है| संगीत ने प्राचीन काल से ही समाज के उत्थान के लिए समय-समय पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है| समाज में फैली कुरीतियों, रूढ़िवादी परम्पराओं इत्यादि को समाप्त करने में संगीत शिक्षा भी प्रभावी ढंग से कार्यरत रही है| ईश्वर भक्ति एवं

धार्मिकता की भावना, चरित्र निर्माण, व्यक्तित्व का विकास, नागरिक एवं सामाजिक कर्त्तव्यों का पालन, सामाजिक कुशलता की उन्नति एवं राष्ट्रीय संस्कृति का संरक्षण और प्रचार-प्रसार प्राचीनकालीन भारत में संगीत शिक्षा के मुख्य उद्देश्य एवं आदर्श माने जाते रहे थे।2 संगीत शिक्षा का मुख्य उद्देश्य केवल कलाकार तैयार करना नहीं होता था , बल्कि एक संवेदनशील और संतुलित समाज का निर्माण करना भी था। संगीत सदैव से व्यक्ति के मानसिक, भावनात्मक और बौद्धिक विकास में सहायता करता हुआ देखा गया है। संगीत शिक्षा का महत्वपूर्ण अर्थ, संगीत के विभिन्न पक्षों – जैसे गायन, वादन, नृत्य, ताल, लय, राग, भाव आदि का व्यवस्थित एवं सम्पूर्ण रूप से अध्ययन एवं प्रशिक्षण करना होता है। यह शिक्षा विद्यालयों, विश्वविद्यालयों, संगीत संस्थानों तथा गुरुकुल परंपरा के माध्यम से समाज में स्थापित देखने को मिल रही है| वर्तमान समय में संगीत शिक्षा का महत्व एवं आवश्यकता कई अन्य कारणों से भी बढ़ता हुआ देखा जा सकता है| यह सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखनें तथा युवाओं को रोजगार के अवसर प्रदान करने और साथ ही साथ समाज में सौहार्द और सहयोग की भावना को विकसित करने का कार्य करती है जिससे समाज में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को मानसिक तनाव से विछिन्न रखा जा सके |

सामाजिक विकास में संगीत शिक्षा की भूमिका

सामाजिक एकता और सद्भाव:-

संगीत, समाज में एकता और भाईचारे की भावना को बढ़ानें में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जब लोग किसी संगीत कार्यक्रम, भजन, कीर्तन या सांस्कृतिक उत्सव में एकत्र होते हैं तो उनमें आपसी सहयोग और प्रेम की भावना विकसित होती देखी जाती है। "समस्त भारतीय संगीत की एकता मौलिक है, मार्ग भेद या शैली भेद के कारण दिखने वाले भेद वाह्य हैं। विभिन्नता में एकता भारतीय संगीत का प्रमुख संदेश रहा है|"3 भारत जैसे बहुसांस्कृतिक देश में संगीत विभिन्न भाषाओं, धर्मों और संस्कृतियों के लोगों को जोड़ने में उत्कृष्टता के साथ कार्यरत दिखाई देता है। लोकगीत, भजन, सूफी संगीत और शास्त्रीय संगीत सभी सामाजिक समरसता को बढ़ावा देने में तत्पर दिखाई देते हैं।

सांस्कृतिक परंपराओं का संरक्षण:- समस्त मानव समाज के विकास की व्यष्टिमय तथा समष्टिमय उपलब्धियाँ ही 'संस्कृति' कहलाती है। मानवता को विशिष्ट बनाने वाले तत्त्व उसके आदर्श और उसकी परम्पराएँ और मान्यताएँ हैं।4 संगीत शिक्षण के माध्यम से समाज अपनी सांस्कृतिक परंपराओं और विरासत को सुरक्षित रखा जा सकता है। भारत में लोकसंगीत, लोकनृत्य और शास्त्रीय संगीत पीढ़ी दर पीढ़ी संगीत शिक्षा के माध्यम से ही आगे बढ़ते देखे जा रहे हैं। यदि संगीत शिक्षा का प्रसार न हो तो कई पारंपरिक लोकसंगीत और वाद्ययंत्र समय के साथ लुप्त हो सकते हैं, इसलिए संगीत शिक्षण को सांस्कृतिक संरक्षण का महत्वपूर्ण माध्यम बनाना आवश्यक सिद्ध होता है।

नैतिक और मानवीय मूल्यों का विकास:- संगीत शिक्षा व्यक्ति में अनुशासन, धैर्य, समर्पण और संवेदनशीलता जैसे गुणों का विकास करने में अग्रसर रहती देखी जाती है। संगीत शिक्षण अभ्यास, नियमितता और एकाग्रता की मांग करता है, जिससे व्यक्ति के चारित्रिक निर्माण का प्रादुर्भाव किया जा सकता है। भक्ति संगीत और आध्यात्मिक गीत व्यक्ति में नैतिक मूल्यों को मजबूत बनानें तथा समाज को सकारात्मक दिशा प्रदान करते देखे जाते हैं।

मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक संतुलन:- आज के तनावपूर्ण युक्त जीवन में संगीत मानसिक शांति और संतुलन प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। संगीत शिक्षा के माध्यम से संगीत को सुनकर ,उसे समझते और अनुभव करते हैं ताकि यह मानव मन में उपजे अवसाद, चिंता और मानसिक तनाव को कम करने में सहायक सिद्ध हो सके।किसी बात से मन दुःखी होने पर भक्तिपरक संगीत सुनने से मन को शान्ति मिलती है। उत्तेजना तथा उत्साह के समय उल्लासपूर्ण या राष्ट्रीय चेतना जागृत करने वाला या श्रम-संबंधी प्रसंगों से युक्त संगीत मन का उत्साह द्विगुणित कर देता है। हृदय की कोमल भावनाओं को जागृत करने में शृंगारिक संगीत की भूमिका अहम् दिखाई देती है।[5] इससे एक स्वस्थ और सकारात्मक वातावरण युक्त समाज का निर्माण होता हुआ देखा जा सकता है।

आर्थिक विकास में संगीत शिक्षा की भूमिका:- हमारे भारतीय संगीत में प्राचीन काल से अब तक संगीत शिक्षण के साथ साथ संगीत के माध्यम से जीविकोपार्जन करने की प्रथा देखने को मिलती रही है| वर्तमान समय में संगीत के द्वारा रोजगार प्राप्त करने के अनेकानेक अवसर देखे जा सकते है| सर्वप्रथम संगीत शिक्षा से जुड़े कई प्रकार के रोजगार उपलब्ध देखने को मिल रहे हैं |जैसे –

- संगीत शिक्षक
- गायक और वादक
- संगीत निर्देशक
- रिकॉर्डिंग कलाकार
- रेडियो और टीवी कलाकार
- संगीत निर्माता
- संगीत शोधकर्ता

इन सभी क्षेत्रों में एक प्रशिक्षित व्यक्ति की आवश्यकता दिखाई देती है, जिससे रोजगार के अवसर भी प्रस्फुटित होते हैं। शिक्षण संस्थानों,स्कूल कॉलेजों, विश्वविद्यालयों, ऑनलाइन कोर्स या व्यक्तिगत कक्षाओं में संगीत की शिक्षा प्रदान कर धनार्जन करना भी वर्तमान समय का अत्यंत लोकप्रिय सादन बनकर हमारे समक्ष परिलक्षित हो रहा है।विगत कुछ वर्षों में संगीत शिक्षा से प्राप्त राजस्व को निम्नलिखित सारणी द्वारा दर्शाया जा रहा है :

वर्ष	राजस्व (करोड़ में)
2018	500
2019	600
2020	700
2021	900
2022	1,000
2023	1,300 [6]

सांस्कृतिक उद्योग का विकास:- संगीत शिक्षा सांस्कृतिक उद्योगों को भी मजबूत बनाती है। आज संगीत उद्योग में फिल्म संगीत, एल्बम, लाइव कॉन्सर्ट, डिजिटल संगीत प्लेटफॉर्म आदि शामिल देखे जा रहे हैं। इन सभी क्षेत्रों में संगीतकारों, तकनीशियनों और प्रशिक्षित कलाकारों की आवश्यकता होती है। इससे आर्थिक गतिविधियाँ बढ़ती हैं और देश की अर्थव्यवस्था को भी लाभ मिलता है।

पर्यटन को बढ़ावा:- संगीत और संस्कृति से जुड़े उत्सव और समारोह पर्यटन को भी बढ़ावा देते हैं। कई शहर और क्षेत्र अपने संगीत और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के कारण प्रसिद्ध देखे जाते हैं। जहाँ समय-समय पर जनता एवं प्रशासन की ओर से संगीत सम्मेलनों का आयोजन किया जाता रहता है। जिनमे मुख्यतः प्रयाग, बनारस, ग्वालियर, पुना, मुंबई, कोलकाता आदि शहरों में संगीत के सम्मेलनों का

आयोजन निरंतर होता रहता देखा जाता है।[7] जब लोग इन कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए आते हैं तो स्थानीय व्यापार, होटल, परिवहन आदि को भी आर्थिक रूप से लाभ मिलता है।

लोक कलाकारों की आजीविका:- संगीत शिक्षा के प्रसार से लोक कलाकारों को भी अपनी कला प्रस्तुत करने और सिखाने के सुअवसर प्राप्त होते रहते हैं। इससे उनकी आजीविका तो सुरक्षित होती ही है और साथ ही साथ हमारी पारंपरिक कलाओं को जीवित भी रखा जा सकता है।

शिक्षा प्रणाली में संगीत का महत्व:- वर्तमान समय में देशभर मे अनेक संगीत संस्थाएं संगीत शिक्षण का कार्यभार संभाले हुए देखने को मिलती हैं| प्रयाग संगीत समिति इलाहबाद, भातखंडे संगीत समिति, म्यूजिक कॉलेज कोलकाता, इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, गंधर्व महाविद्यालय इसके अलावा भारत के लगभग सभी विश्वविद्यालयों में संगीत गायन, वादन तथा नृत्य में स्नातक, परास्नातक पीएचडी, डी लिट आदि में संगीत विषय से डिग्री तथा डिप्लोमा करवाया जा रहा है। संगीत की अनेक पुस्तकों का प्रकाशन नित-प्रतिदिन, संगीत कार्यालय हाथरस, संगीत सदन प्रकाशन इलाहबाद, जैसे प्रकाशकों द्वारा मासिक एवं वार्षिक पत्र-पत्रिकाओं के रूप में प्रकाशित किये जाते देखे जा रहे हैं।[8] संगीत छात्र छात्राओं के समग्र विकास के लिए विद्यालय और विश्वविद्यालय स्तर पर संगीत शिक्षा का समावेश अत्यंत आवश्यक परिलक्षित हो रहा है।

संगीत शिक्षा के द्वारा छात्रों की कल्पनाशक्ति और रचनात्मकता को बढ़ाया जा सकता है। जब छात्र संगीत सीखते हैं तो वे नवीन विचारों और अभिव्यक्तियों को विकसित करनें में सक्षम होने लगते हैं। संगीत का संस्कार, उसका अभ्यास छात्रों की एकाग्रता और स्मरण शक्ति को बढ़ाने में सहायता करता हुआ देखा जाता है। संगीत सीखने वाले छात्रों की शैक्षणिक क्षमता अन्य छात्रों की अपेक्षा बेहतर देखि जाती है। जब छात्र मंच पर प्रस्तुति देने के लिए अग्रसर होते हैं तो उनका आत्मविश्वास बढ़ता जो उनके जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी उपयोगी सिद्ध होता है।

आधुनिक युग में संगीत शिक्षा:- हमारे सामाजिक जीवन के अनेक क्षेत्रों में संगीत की विशेषताओं का व्यापक रूप देखने को मिलता है। विज्ञापन संगीत एवं धुने, पार्श्व संगीत, फिल्म-संगीत, संगीत निर्देशन, गीत फीचर, समूहगान, सहगान, वाद्यवृन्द, संगीत-नाटिका, संगीत प्रेक्षागृह तथा खन्यांकन कक्ष (रिकार्डिंग स्टूडियो) तथा ध्वन्यांकन प्राविधिक अभियांत्रिकी एवं तकनीक, दूरदर्शन, आकाशवाणी, संगीत नाटक अकादमी, संगीत रिसर्च अकादमी (ITC), भारतीय सांस्कृतिक सम्बद्ध परिषद, संस्कृति विभाग (भारत सरकार), साहित्य कला परिषद् (दिल्ली सरकार) एवं सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र (CCRT) इत्यादि द्वारा अनुदान, सैद्धान्तिक व व्यावहारिक कला के रूप में संगीत की नयी संभावनाएं सामने देखने को मिल रही हैं। आधुनिक समय में संगीत सुनने, सीखने, सुरक्षित रखने की तकनीक में वृहद् रूप में सुधार हुआ देखने को मिल रहा है। संगीत विषय के क्षेत्र में सुविधाएं सुलभ हो रही हैं।[9] इसके अतिरिक्त तकनीकी विकास के साथ संगीत शिक्षा के स्वरूप में भी परिवर्तन देखने को मिल रहा है। आज ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, डिजिटल रिकॉर्डिंग और सोशल मीडिया के माध्यम से भी संगीत सीखना और सिखाना आसान हो गया है। ऑनलाइन कक्षाएँ, वीडियो ट्यूटोरियल और डिजिटल संगीत उपकरणों ने संगीत शिक्षा को अधिक सुलभ बना दिया है। इससे दूर-दराज के क्षेत्रों में रहने वाले लोग भी सुलभता से संगीत सीख पा रहे हैं।

संगीत शिक्षा की चुनौतियाँ और समाधान:- कई विद्यालयों, विश्वविद्यालयोंसंस्थाओं आदि में संगीत शिक्षा को पर्याप्त महत्व दिया जाता नहीं देखने को मिलता है। कुछ एक महाविद्यालयों में कई प्राचार्यों ने बी० ए० प्रथम वर्ष में 25 से 30 विद्यार्थियों का प्रवेश ही मान्य किया है, जो सर्वथा उचित प्रतीत नहीं होता है। वर्तमान में अधिकतर विद्यालयों में कक्षा 12वीं तक कक्षाओं में संगीत विषय रखा ही नहीं गया है। परिणामतः बी० ए० प्रथम वर्ष में आने वाला विद्यार्थी संगीत विषय से पूर्णतः अनभिज्ञ होता है। जबकि कालेज में प्रवेश लेने के पूर्व विद्यार्थी को स्वर-ताल व 10 रागों का पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक माना जाता है । यह विषय ऐसा भी नहीं है कि मात्र किताब पढ़कर परीक्षा को पूर्ण कर लिया जाये।[10] इसके अतिरिक्त कई विद्यालयों में आज भी संगीत शिक्षा को पर्याप्त महत्व नहीं दिया जा रहा है तथा जय जगह प्रशिक्षित संगीत शिक्षकों की कमी भी देखने को मिलती है। संगीत शिक्षण के आने वाली समस्यां से निजात पाने के लिए हमे यह सुनिश्चित करना होगा कि विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में संगीत शिक्षा को अनिवार्य या वैकल्पिक विषय के रूप में शामिल किया जाये। संगीत शिक्षकों के प्रशिक्षण की भी व्यवस्था करनी चाहिए। इसके साथ-साथ लोक कलाकारों

और पारंपरिक संगीत को प्रोत्साहन देना तथा सरकार और सांस्कृतिक संस्थाओं को संगीत कार्यक्रमों और शोध को भी राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बढ़ावा देना चाहिए।

निष्कर्ष:-

सामाजिक-आर्थिक विकास में संगीत शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध होती परिलक्षित हो रही है। यह न केवल समाज को सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बनाती है, बल्कि आर्थिक दृष्टि से भी अनेंकनेक अवसर प्रदान करती है। संगीत शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण, सामाजिक एकता और मानसिक स्वास्थ्य में भी महत्वपूर्ण योगदान देती हुई देखी जा रही है। आज के समय में यह आवश्यक हो गया है कि संगीत शिक्षा को शिक्षा प्रणाली का महत्वपूर्ण हिस्सा बनाया जाए और इसे समाज के सभी वर्गों तक पहुँचाने का भरसक प्रयास किया जाए, जिससे ना केवल हमारी सांस्कृतिक विरासत सुरक्षित रहेगी, बल्कि समाज का समग्र विकास भी संभव हो पाएगा। इस प्रकार कहा जा सकता है कि संगीत शिक्षा केवल कला का अध्ययन नहीं है, बल्कि यह सामाजिक-आर्थिक उन्नति का एक प्रभावी माध्यम भी है।

सन्दर्भ सूचीं:-

1. गुप्ता डॉ. रूचि, भारतीय संस्कृति शाश्वत जीवन दृष्टि एवं संगीत, कनिष्क पुब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, (2006) पृ. सं.1
2. तिवारी, डॉ. के. के. भारतीय शिक्षा: विकास एवं समस्याएँ, इलाहाबाद, .(1993), पृ. सं. 5
3. परांजपे डॉ.शरदचंद श्रीधर, संगीत बोध, मध्य प्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी,भोपाल, (1972), पृ. सं.10
4 . गुप्ता डॉ. रूचि, भारतीय संस्कृति शाश्वत जीवन दृष्टि एवं संगीत, कनिष्क पुब्लिशार्स, (2006) डिस्ट्रीब्यूटर्स, पृ. सं.2
5. अनहद लोक , वर्ष-1, अंक-2, व्यंजन, आर्ट एंड कल्चर सोसाइटी, इलाहाबाद, पृ. सं.198
6. अनहद लोक , वर्ष-11, अंक-21, व्यंजन, आर्ट एंड कल्चर सोसाइटी, इलाहाबाद, पृ. सं.501
7. अनहद लोक , वर्ष-11, अंक-21, व्यंजन, आर्ट एंड कल्चर सोसाइटी, इलाहाबाद, पृ. सं.500
8. वही पुस्तक - पृ. सं.500
9. ऋषितोष, डॉ० कुमार, संगीत शिक्षण के विविध आयाम,कनिष्क पुब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, ,(2010) पृ. सं.145
10. पलनीटकर डॉ. अलकनंदा, शास्त्रीय संगीत शिक्षा: समस्याएँ एवं समाधान, आदित्य पुब्लिशर्स, (2006), पृ. सं. 24